Shri Shri Bhasha AshtakaM

श्रीश्रीभाषाष्टकम्

Document Information

Text title : BhAshashtakam

File name : bhAShAShTakam.itx

Category : devii, sarasvatI, aShTaka

Location : doc_devii

Transliterated by : Vani V

Proofread by : Vani V

Latest update : March 13, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org

Shri Shri Bhasha AshtakaM

श्रीश्रीभाषाष्टकम्

आगच्छ वरदे मातः सुतकल्याणतत्परे ।
नाशय हृदयध्वान्तं ज्ञानमयेन तेजसा ॥ १॥

प्रसिच्य चित्तं करुणापयोभिः स्वनुर्वं क्षेत्रमिदं सुतानाम् ।
ज्ञानस्य बीजं विविधं विधात्रि संरोप्यतां नो भवदुःखहन्त्रि ॥ २॥

वीणापुस्तकधारिणी भगवती देवासुरैर्वन्दिता,
श्वेताम्भोजनिवासिनी सुवरदा कल्याणविस्तारिणी ।
या शुभ्रांशुसमानना दुरितहा या शुभ्रपद्मासना,
सा नः पातु सरस्वती स्मितमुखी सन्तानशर्मप्रदा ॥ ३॥

सरस्वती श्वेतमरालवाहा अनाथनाथा करुणाविधात्री ।
शुधांशुशुभ्रा परमा परेशी करोतु नित्यं विदुषां शुभं सा ॥ ४॥

सुतमानसपङ्कजनौ मलिने चरणाम्बुजरेणुसमूहशुचौ ।
कृपया करुणामयि कृष्णकचे वस भारति भारतभव्यप्रदे ॥ ५॥

शशधरसितहंसैर्वेष्टिता ज्ञानदात्री
निखिलभुवनकर्त्री भारती ब्रह्मपुत्री ।
अकृतितनयदुःखे कातरा त्राणकर्त्री
जयति जयति देवी वल्लकीवाद्यकर्त्री ॥ ६॥

विमलकमलशोभां धारयन्ती मनोज्ञां,
तनयकुशलदात्री पद्मिनी चित्स्वरूपा ।
अमरदनुजवन्द्या कच्छपीन्यस्तहस्ता,
नयतु हृदयमोहव्यूहनाशं दयार्द्रा ॥ ७॥

निरस्य मोहं हृदये निलीनं प्रबाधकं मुक्तिधनस्य घोरम् ।
प्रेक्षा सुतानां चरणे त्वदीये सम्प्रेष्यतां भो वचसामधीशे ॥ ८॥

इति श्रीश्रीभाषाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Vani V

Shri Shri Bhasha AshtakaM

pdf was typeset on September 16, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*